लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त

समय के खेले खेल ने,
मानवता को दशकों पीछे है धकेला।
फिर इंसान के उस अभिमान का,
रह जाता ना कोई अर्थ,
लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

सुख साधन चाहे जितने हो,
पर काया रोग का घर हो।
उन अग्निक सुविधाओं का,
फिर रह जाता ना कोई अर्थ,
लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

इंसान सह कर प्रकोप महामारी का,
तिनका-तिनका बन गिर जाए।
फिर आधुनिक विज्ञान के आविष्कारों का,
रह जाता ना कोई अर्थ,
लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

स्कूल बंद है जहां हो सड़कें वीरान,
श्मशान बन गए हैं वहां स्वास्थ्य संस्थान।
ऐसे प्रगतिशील विकास का,
फिर रह जाता ना कोई अर्थ,
लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

नित जीवन के संघर्षों से,
जब टूट चुका हो अंतर्मन।
तब सुख के मिले समंदर का,
रह जाता ना कोई अर्थ,

लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

संबंध कोई भी हो लेकिन,
प्रकृति के दुःख में भागीदार बने अपना।
5 जून के उन वृक्षारोपण का,
फिर रह जाता ना कोई अर्थ,
लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

इंटरनेट का हो खुमार जहां,
आज सब है ऑनलाइन वहां।
बच्चे घर पर ही सब सीख रहे,
बना कर विज्ञान को समर्थ,
लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

छोटी-छोटी कोशिशों के संग,
मिल रहे हैं खुशियों के क्षण।
इंसानों के बंद होने से,
प्रकृति को मिला सुख का सही अर्थ,
लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

गलियों में निकले घूमने,
दशकों बाद आज वो मृग।
नहरों में गोते खाती मछलियों को मिला,
आजादी का सही अर्थ,
लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

कुछ दिनों की बात है,
सभी इस लड़ाई में साथ हैं।
रहकर घर में अपने,
कर्मवीरों के प्रयासों को दे सही अर्थ,

लॉकडाउन ही है आखिरी शर्त।।

Nitish Gaitri
4th yr. UG

Last modified: 5:34 pm